विकासात्मक कार्यों से विकसित होगी राजभाषा -प्रो. ए. अरविंदाक्षन

हिंदी विश्वविद्यालय में ‘21वीं सदी में राजभाषा हिंदी’ पर दो दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला का उदघाटन

वर्धा दि. 01 मार्च 2012: हिंदी को राजभाषा के रूप में विकसित करने के लिए केवल प्रशासनिक स्तर पर ही नहीं बल्कि हिंदी से संबंधित विकासात्मक कार्यकलापों के माध्यम से कार्य करने की जरूरत है। राजभाषा को जनभाषा बनाना हो तो तमाम प्रौद्योगिकी के ज्ञान को हिंदी में उपलब्ध कराना होगा। चीन, जापान और फ्रांस जैसे देश अपनी भाषाओं में काम कर सकते हैं तो हम हिंदी में काम क्यों नहीं कर सकते। उक्त आशय के विचार महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा के प्रतिकुलपति प्रो. ए. अरविंदाक्षन ने व्यक्त किये। वे विश्वविद्यालय में अनुवाद एवं निर्वचन विद्यापीठ की ओर से 1 व 2 मार्च को ‘21वीं सदी में राजभाषा हिंदी’ विषय आयोजित दो-दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला के उदघाटन समारोह की अध्यक्षता करते हुए बोल रहे थे। विवि के भाषा विद्यापीठ के सभाकक्ष में आयोजित समारोह के अवसर पर पूर्व में केंद्रीय सूचना-संचार मंत्रालय में वरिष्ठ निदेशक और जापान में भारतीय दूतावास में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के सलाहकार के रूप में कार्य कर चुके

भाषा प्रौद्योगिकी के विशेषज्ञ प्रो. ओम विकास (नई दिल्ली), हैदराबाद विश्वविद्यालय में अनुप्रयुक्त भाषा एवं अनुवाद अध्ययन केंद्र के प्रो. पंचानन मोहंती, विश्वविद्यालय के भाषा विद्यापीठ के संकायाध्यक्ष प्रो. उमाशंकर उपाध्याय, प्रो. महेंद्र कुमार पाण्डेय, डॉ. अन्नपूर्णा सी. सहित देश के विभिन्न कार्यालयों एवं संस्थाओं से आए प्रतिभागी प्रमुखता से उपस्थित थे।

प्रो. अरविंदाक्षन ने हिंदी के प्रति विश्वविद्यालय के दायित्व का जिक्र करते हुए कहा कि ज्ञान-विज्ञान की समस्त विधाओं की हिंदी में पठन-पाठन करने की प्रक्रिया हमने आरंभ की है। प्रबंधन जैसे पाठयक्रमों को हम हिंदी में संचालीत कर रहे हैं। आगे चलकर इंजीनियरिंग, मेडिकल और कृषि जैसे विषयों को हम हिंदी में लाने का प्रयास करेंगे। उन्होंने यह भी उल्लेख किया कि नेशनल ट्रांसलेशन मिशन का जो काम मैसूर में चल रहा है, उसमें हिंदी का काम इस विश्वविद्यालय को मिलना चाहिए। ज्ञान के विभिन्न अनुशासनों को हिंदी में लाने के लिए हम एक महत्वाकांक्षी योजना तैयार कर रहे हैं जिसके लिए हम भारत सरकार से भी अनुरोध करेंगे। राजभाषा से संबंधित अधिकारियों को अपडेट करने, उनकी ज्ञान क्षमता को बढ़ाने तथा उन्हें विवि के साथ जोड़ने का काम हमें आगामी वर्षों में करना है। उन्होंने कार्यशाला में उपस्थित प्रतिभागियों से आहवान किया कि शिक्षा और शोध के क्षेत्र में विकल्प तैयार करने के लिए हमें सक्षम होना होगा।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित प्रो. ओम विकास ने सवाल उठाया कि अनुवाद के सहारे हिंदी का हम कब तक उपयोग करते रहेंगे। हिंदी को ग्लोबल बनाना है तो उसे अनुवाद की बैसाखियों से मुक्त कराना होगा। पाठकोन्मुखी अनुवाद की महत्ता को बताते हुए उन्होंने कहा कि मौलिक लेखन के लिए विषय को पठनीय बनाने की दिशा में अनुवादकों को काम करना चाहिए। उन्होंने कहा कि नीति निर्धारण की दिशा में इस प्रकार की कार्यशाला महत्वपूर्ण है और विश्वविद्यालय को चाहिए कि वह विवि में 'टेक्नोजॉलिकल ट्रांसक्रिएशन मिशन' शुरू करने का प्रस्ताव भारत सरकार के पास भेंजे।

प्रास्ताविक भाषण में अनुवाद एवं निर्वचन विद्यापीठ की अध्यक्ष डॉ. अन्नपूर्णा सी. ने बताया कि दो दिवसीय कार्यशाला में मशीनी अनुवाद, सूचना

प्रौद्योगिकी और अनुवाद, भाषा विज्ञान और अनुवाद तथा ज्ञान आधारित पाठ और अनुवाद आदि विषयों पर विमर्श होगा। विभाग द्वारा चलाए जा रहे विभिन्न पाठ्यक्रमों की जानकारी भी उन्होंने दी। कार्यशाला में सेंट्रल इंस्टिटयूट ऑफ फिशरीज टेक्नोलॉजी, कोचीन के उप निदेशक डॉ. जेस्सी जोसेफ, सेंट्रल मेरिन फिशरीज रिसर्च की राजभाषा की सहायक निदेशक शीला पी. जे., सेंट्रल फिशरीज एज्युकेशन इंस्ट्टियूट के तकनीकी अधिकारी प्रताप कुमार दास, एचओसीएल, कोचीन के हिंदी अधिकारी ओ. रमेश, 'नीरी', नागपुर के हिंदी अधिकारी यू. एम. टाकलिकर, बैंक ऑफ इंडिया, वर्धा के राजभाषा प्रभारी मुरलीधर बेलखोडे तथा विवि के हिंदी अधिकारी राजेश कुमार यादव शामिल थे। उदघाटन समारोह का संचालन अनुवाद एवं निर्वचन विद्यापीठ के असिस्टेंट प्रोफेसर डॉ. अनवर अहमद सिद्दीकी ने किया। डॉ. रामप्रकाश यादव ने धन्यवाद ज्ञापित किया। इस दौरान विशेष कर्तव्याधिकारी नरेन्द्र सिंह, डॉ. कृपाशंकर चौबे, डॉ. राजीव रंजन राय, डॉ. ललित किशोर शुक्ला, डॉ. एम. एम. मंगोडी, डॉ. फरहद मलिक, शैलेश कदम मरजी, अंजनी कुमार राय उपस्थित थे। कार्यशाला का समापन शुक्रवार को होगा जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में केंद्रीय गृह मंत्रालय के राजभाषा विभाग, नई दिल्ली में संयुक्त सचिव (राजभाषा) डॉ. डी. के. पांडेय उपस्थित रहेंगे।

बी. एस. मिरगे
जनसंपर्क अधिकारी

xka/kh fgYI] o/kkZ&442 005 ¼egkjk"Vª½] Hkkjr
Gandhi Hills, Wardha-442 005 (Maharashtra), INDIA
फोन/फैक्स: 07152-252651
bZ&esy@E-mail: pro@hindivishwa.org, osclkbV@Website: www.hindivishwa.org

विकासात्मक कार्यातूनच राजभाषा विकसित होईल -प्रो. ए. अरविंदाक्षन

हिंदी विश्वविद्यालयात '21व्या शतकात राजभाषा हिंदी' विषयावर दोन दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाळेचे उदघाटन

वर्धा दि. 01 मार्च 2012: हिंदीला राजभाषा म्हणून विकसित करण्यासाठी केवळ प्रशासकीय स्तरावर नव्हे तर विकासात्मक कार्यक्रम आणि उपक्रमांच्या माध्यमातून काम केले पाहिजे असे आवाहन महात्मा गांधी आंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालयाचे प्रकुलगुरू प्रो. ए. अरविंदाक्षण यांनी केले. विश्वविद्यालयातील अनुवाद आणि निर्वचन विद्यापीठाच्या वतीने 21व्या शतकात राजभाषा हिंदी या विषयावरील दोन दिवसाच्या राष्ट्रीय कार्यशाळेच्या उदघाटन प्रसंगी ते (गुरूवारी) बोलत होते. राजभाषा ही जनभाषा झाली पाहिजे असे सांगून ते म्हणाले की त्यासाठी तमाम तंत्रज्ञान क्षेत्रातील ज्ञान हे हिंदीमध्ये उपलब्ध झाले पाहिजे. यावेळी केंद्रीय सूचना-संचार मंत्रालयात वरिष्ठ माजी निदेशक प्रो. ओम विकास, हैदराबाद विश्वविद्यालयातील प्रो. पंचानन मोहंती, विश्वविद्यालयातील भाषा विद्यापीठाचे अधिष्ठाता प्रो. उमाशंकर उपाध्याय, प्रो. महेंद्र कुमार पाण्डेय, डॉ. अन्नपूर्णा सी. सहित कार्यशाळेकरिता आलेले प्रतिनिधी उपस्थित होते.

प्रो. अरविंदाक्षण म्हणाले की इंजीनियरिंग, मेडिकल आणि कृषि सारखे विषय आम्हाला हिंदीतून शिकवायला हवे त्यासाठी विश्वविद्यालय प्रयत्न करील आहे. नॅशनल ट्रांसलेशन मिशनचे काम मैसूर येथे होत आहे त्यातील हिंदीचे काम विश्वविद्यालयाकडे आले पाहिजे असा आमचा आग्रह आहे. अनुवादाशी संबंधित एक महत्वाकांक्षी योजना चालू करण्याचा आमचा मानस आहे. असेही ते म्हणाले. प्रो. ओम विकास म्हणाले की हिंदीला

ग्लोबल स्वरूप द्यायचे असेल तर तिला भाषांतराच्या कुबडयापासून मुक्त केले पाहिजे. भाषांतर करतांना ते लेखकोन्मुखी होण्याऐवजी वाचकोन्मुखी झाले पाहिजे असेही ते म्हणाले. विश्वविद्यालयाने 'टेक्नोजॉलिकल ट्रांसक्रिएशन मिशन' शुरू करावे अशी विनंतीही ओम विकास यांनी यावेळी केली. कार्यशाळेत सेंट्रल इंस्टिटयूट ऑफ फिशरीज टेक्नोलॉजी, कोचीन चे उप-निदेशक डॉ. जेस्सी जोसेफ, सेंट्रल मेरिन फिशरीज रिसर्चच्या शीला पी. जे., सेंट्रल फिशरीज एज्युकेशन इंस्टि्टयूटचे प्रताप कुमार दास, एचओसीएल, कोचीनचे ओ. रमेश, 'नीरी', नागपूर येथील नीरीचे हिंदी अधिकारी यू. एम. टाकळीकर, बँक ऑफ इंडिया, वर्धा येथील राजभाषा प्रभारी मुरलीधर बेलखोडे तसेच विविचे हिंदी अधिकारी राजेश कुमार यादव सहभागी झाले.

बी. एस. मिरगे

जनसंपर्क अधिकारी